

---

# Shri Jagannatha Saptakam

श्रीजगन्नाथसप्तकम्

## Document Information

---

Text title : jagannAthasaptakam

File name : jagannAthasaptakam.itx

Category : saptaka, vishhnu, jagannatha, vishnu, pradIptakumArananda, krishna

Location : doc\_vishhnu

Author : (Copyright) Pradipta Kumar Nanda, Kendrapara, Orisa pknanda65 at gmail.com

Transliterated by : Pradipta Kumar Nanda

Proofread by : Pradipta Kumar Nanda

Acknowledge-Permission: (Copyright) Pradipta Kumar Nanda

Latest update : June 20, 2020

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Jagannatha Saptakam

---

### श्रीजगन्नाथसप्तकम्

---



प्रकाशकान्तचिन्मयं प्रसन्नदारुविग्रहं  
प्रकुल्लकुल्लसुन्दरं पुरीप्रमोदमन्दिरम् ।  
विषाणुसङ्घशोषिणं विशालवैद्यघोषिनं  
सडास्यगोलवोथनं मडाप्रभुं भजाम्यहम् ॥ १ ॥

परम्पराविमण्डितं तटे वटे मठे रतं  
मडाप्रसादमज्जितं मडानुभावसज्जितम् ।  
सुवर्णकीर्णनिर्जितं समन्दमन्दडासितं  
पडण्डिनृत्यपण्डितं जगद्गुरुं भजाम्यहम् ॥ २ ॥

त्रितापपापनाशकं त्रिधातुदोषघातकं  
सुपञ्चभूतशोधकं विषाणुवेगरोधकम् ।  
नितान्तशान्तिदायकं मडार्तिनाशकारकं  
सदा जगत्सुरक्षकं मडाप्रभुं भजाम्यहम् ॥ ३ ॥

रथे कदापि सत्वरं विचित्रवीर्यभीश्वरं  
मुभारविन्दसिन्दूरं सगद्गदं सुधासरम् ।  
मडापुराणसत्करं मडेश्वरीपुरःसरं  
सघोषदर्षतत्परं सदाशिवं भजाम्यहम् ॥ ४ ॥

निवासनीलपर्वतं प्रकुल्लपीतसत्पटं  
समस्तवैष्णवाश्रितं समुद्रकूलनिर्जितम् ।  
नितान्तशान्तचिद्धनं घनाघनप्रभायुतं  
नियन्तुरोगभौतिकं सिषण्वरं भजाम्यहम् ॥ ५ ॥

ग्रहेशदर्षडारिणं भगेशयानचारिणं  
नृशंस-कंसमर्दनं समस्तगोपशासनम् ।  
सरागराधिकाधवं कृपालुनीलमाधवं  
नवीनयौवनोज्वलं भजे नियोलमुज्ज्वलम् ॥ ६ ॥

नियोगभोगभक्षणं वियोगवेगमर्षणं

सुपुष्पहारधारिणं यरायरस्य पारिणम् ।

समन्त्रतन्त्रनायकं प्रवीणवेणुवादकं


विषाणुमुक्तिदायकं भजे सुप्रदायकम् ॥ ७ ॥

इति प्रदीपनन्दशर्मविरचितं श्रीजगन्नाथसप्तकं सम्पूर्णम् ।


Composed, encoded, and proofread by

Dr. Pradipta Kumar Nanda, Kendrapara, Orisa pknanda65 at gmail.com

---

——  
*Shri Jagannatha Saptakam*

pdf was typeset on September 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

